International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 66-68

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 66-68
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 26-10-2020
Accepted: 05-12-2020

डॉ0 अमित प्रकाश पाण्डेय
सहा0 आचार्य, ग्रीन फील्ड कालेज सीतापुर, सीतापुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 अमित प्रकाश पाण्डेय
सहा0 आचार्य, ग्रीन फील्ड कालेज सीतापुर, सीतापुर, उत्तर प्रदेश, भारत

स्तोत्र उद्भव व विकास

डॉ0 अमित प्रकाश पाण्डेय

सारः
स्तोत्र काव्य अनुराग तथा वैरागय का संगम है। आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से यह काव्य लोकप्रिय है। इनके रचियता अपने आराध्य की महत्ता तथा अपनी दीनता का प्रदर्शन करते है संस्कृत भक्त कवियों ने नैसर्गिक रूप से उदगारों को व्यक्त किया है क्योंकि भक्ति–भाव से आप्लावित होकर भक्त अपना कोमल हृदय भगवान को समर्पित करता है। प्रस्तुत शोध–लेख के माध्यम से भगवान और भक्त के मध्य सेतु रुप स्तोत्र को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है।

कूट शब्दः विकास, वैरागय का संगम, स्तोत्र काव्य अनुराग

प्रस्तावना
स्तोत्र शब्द की रचना ष्टुञ+ ष्ट्रन से मिलकर हुई है। जिसका सामान्यतः अर्थ स्तुति होता है। आधुनिक परिवेश में देवतापरक स्तुति के लिए प्रयुंक्त की गयी छन्दोंबद्ध वाणी ही स्तोत्र के नाम से अधिगृहीत की जाती है परन्तु वैदिक सम्प्रदाय में स्तोत्र शब्द एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है– 'प्रगीतमन्त्र सांध्या स्तुतिः स्तोत्रम्' अर्थात् सामवेद में ऋक्मन्त्रों के गान सहित जो देव स्तुति की जाती है उसे स्तोत्र कहते हैं। स्तोत्र ऋग्वेदकालीन शब्द 'स्तोम्' के स्थान पर ही कालान्तर में प्रयोग किया जाने लगा। वेदों में स्तोत्र तथा स्तोम् शब्दों को एक मन्त्र में प्रयुक्त स्तोम्य शब्द का अर्थ सायण ने स्तुति किया है–

सखाया आ निषीदति
सविता स्तोम्य नु नः
दाता राधांसि शुम्भति।[1]

वैदिककाल तथा रामायण महाभारत में 'स्तोम' शब्द का प्रयोग मिलता है परन्तु उसके बाद स्तोम शब्द का प्रयोग न के बराबर मिलता है। वेदोत्तरकाल में स्तोम शब्द का स्थान स्तोत्र शब्द ने ग्रहण कर लिया। संक्षिप्ततः स्तोत्र शब्द का अर्थ अपने आराध्य देव के निमित्त स्वकल्याणार्थ जो देवता का गेय मन्त्रों द्वारा स्तवन किया गया है अर्थात् जो पद्यात्मक वाणी इष्ट प्राप्ति तथा अनिष्ट निवाराणार्थ प्रयुक्त की गयी वह स्तोत्र कही जाने लगीं वैदिक स्तोम स्तोत्र (स्तुति) का ही एक प्रकार है। ये दोनों शब्द एक दूसरे के समानार्थी हैं ऐसा अमरकोष में भी उल्लिखित है–
(क) स्तवः स्तोत्र स्तुतिर्नुतिः। [2]
(ख) स्तोमः स्तोत्रड्ध्वरे वन्दे। [3]

भगवान पुण्डरीकाक्ष की भक्ति पूजा अर्चना को सब धर्मों में श्रेष्ठ बताते हुए विष्णुसहस्रनाम कार ने स्तवों का प्रतिपादन किया है–

एष में सर्वधर्माणां धमोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरचैन्नरः सदा।। [4]

ऋग्वेद के एक मंत्र में स्तोता अग्नि देव का स्तवन करना चाहता है। अपनी वाणी द्वारा अग्नि देव की स्तुति कर रहा है–

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
होतारम रत्नधातमम।। [5]

भगवान विष्णु की भक्ति द्वारा संसार की विषयों की मृगतृष्णा को शान्त करने व प्राणियों के प्रति दया भाव बढाने तथा संसाररुपी समुद्र से पार लगाने की इच्छा से स्वामी श्रीशंकराचार्य ने अपने षट्पदी में स्तुति करते हैं–

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णाम्।
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः।।[6]

हे विष्णु भगवान!मेरी उददण्डता दूर कीजिए। मेरे मन का दमन कीजिए और विषयों की मृगतृष्णा को शान्त कर दीजिए। प्राणियों के प्रति दया भाव बढाइये और संसार समुद्र से मुझे पार लगाइए।
माँ भगवती की स्तुति द्वारा दरिद्रता का नाश व पुत्र कलत्र की वृद्धि करने वाली बताते हुए व्यासजी अपने श्री भगवती स्तोत्र में कहते हैं–

जय षण्मुखसायुधईषनुते जयसागरगामिनी शम्भुनुते।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे जयपुत्रकलत्रविवृद्धिकरे।।[7]

सशस्त्र शंकर और कार्तिकेय जी के द्वारा वन्दित होने वाली देवी तुम्हारी जय हो। शिव के द्वारा प्रशंसित एवं सागर में मिलने वाली गंगारुपिणी देवि! तुम्हारी जय हो। दुःख व दरिद्ररता का नाश तथा पुत्र–कलत्र की वृद्धि करने वाली हे देवि! तुम्हारी जय हो जय हो।
श्री भगवच्छरण स्तोत्र में रोगनाश की कामना करते हुए एवं मृत्युभय को दूर करने के लिए प्रार्थना की गई है–

रोगा हरन्ति सततं प्रबलाः शरीरं
कामादयोऽप्यनुदिनं प्रदहन्ति चित्तम्।
मृत्युश्व नृत्यति सदा कलयन् दिनानि
तस्मात्त्वमद्य शरणं मम दीनबन्धो।।[8]

हे भगवान! इस संसार में प्रबल रोग सर्वदा शरीर को क्षीण करते रहते हैं काम आदि भी प्रतिदिन हृदय को जलाते रहते है और मृत्यु भी दिनों को गिनती हुई पास ही नृत्य करती रहती है। इसलिए हे दीनबन्धो! अब मेरे लिए आप ही शरण हैं।
इसी प्रकार महार्षि व्यास ने श्री विश्वनाथाष्टकम् में काशीपति विश्वनाथ जी की स्तुति की है–

पंचाननं दुरितमत्तमतंगजानां
नगान्तकं दनुजपुगंवपन्नगानाम्।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।[9]

जो पापरुपी मतवाले हाथियों के मारने वाले सिंह हैं दैत्य समूहरुपी साँपों का नाश करने वाले गरुड हैं तथा जो मरण शोक और बुढापारुपी भीषण वन को जलाने वाले दावानल है ऐसे काशीपति विश्वनाथ को भज।
आचार्य शंकराचार्य कृत आन्नद लहरी स्तोत्र 20 पद्यों में शिखरणी छन्द में लिखा गया चमत्कारपूर्ण तथा मर्मस्पर्शी स्तोत्र है। इसमे माँ भगवती की स्तुति की गयी है–

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिलता।
स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी
भजामि त्वां गौरी नगपतिकिशोरीमविरतम्।।[10]

तुम्हारे मुख में पान है नेत्रों में काजल की पतली रेखा है ललाट में केसर की बेंदी है गले में मोती का हार सुशोभित हो रहा है कटि के निम्नभाग में सुनहली साडी है जिस पर रत्नमयी मेखला चमक रही है ऐसी वेष–भूषा से सजी हुई गिरिराज हिमालय की गौरवर्णा कन्या तुमको मैं सदा ही भजता हूँ।
चर्पटपंजरिका स्तोत्र 17 श्लोकों में निबद्ध गोविन्द भजन का रसमय उपदेश है। इसमें संगीत की इतनी माधुरी है कि श्रोताओं का हृदय उनकी ओर हठात् आकृष्ट हो जाता है–

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुंचत्याशावायुः।।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते।
प्राप्ते सन्निहते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे।।[11]

दिन और रात सांयकाल और प्रातःकाल शिशिर और वसन्त पुनः पुनः आते है इसी प्रकार काल की लीला होती रहती है और आयु बीत जाती है किन्तु आशारुपी वायु छोडती ही नहीं अतः हे मूढ! निरन्तर गोविन्द को ही भज क्योंकि मृत्यु के समीप आने पर 'डुकृञ्करणे' यह रटना रक्षा नहीं कर सकेगी।
श्रीमद्भागवत महापुराण में भीष्म ने भगवान कृष्ण की स्तुति की है–

त्रिभुवनकमनं तमानवर्णं
रविकरगौरवराम्बरं दधाने।
वपुरलककुलावृताननाब्जं
विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या।।[12]

त्रिभुवन सुन्दर तमालवर्ण सूर्य किरणों के समान उज्ज्वल और पवित्र वस्त्र धारण करने वाले तथा जिनका मुखकमल अलकावली से आवृत्त है उन अर्जुन–सखा में मेरी निष्काम प्रीति हो।
बुधकौशिक ऋषि कृत श्रीरामरक्षास्तोत्र में श्रीरामचन्द्र की स्तुति की गयी है तथा उनके नामों का स्मरण मात्र से मनुष्य पापों में लिप्त नहीं होता है–

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।।[13]

राम रामभद्र रामचन्द्र इन नामों का स्मरण करने से मनुष्य पापों से लिप्त नहीं होता तथा भोग और मोक्ष प्राप्त कर लेता है।
अकालमृत्यु –रोगादि से रक्षा करने वाला परम उपयोगी एवं अनुभूत मृत्युंजय स्तोत्र में भगवान शंकर की स्तुति की गयी है–

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिश्रृंगनिकेतनं
शिजिंनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै थमः।।[14]

कैलाश के शिखर पर जिनका निवास है जिन्होंने मेरुगिरि का धनुष नागराज वासुकि की प्रत्यंचा और भगवान विष्णु को अगिनमय बाण बनाकर तत्काल ही दैत्यों के तीनों पुरों को दग्ध कर डाला था सम्पूर्ण देवता जिनके चरणों की वन्दना करते हैं उन भगवान चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा।
अपने इष्ट के प्रति की गयी ऐसी प्रशंसा या स्तुतिपरक वाणी स्तोत्र है जो देवता के स्वरुप वर्णन,कर्म,अष्टयाग,सेवादान क्षेत्रादि एवं उसके निस्सीम गुणों से सम्बद्ध हो।
चारों वेदों अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद की संहिताओं के सूक्तों में विविध देवताओं की स्तुतियाँ देखने से प्रतीत होता है कि यह स्तोत्र अर्थात् स्तुति परम्परा अतिप्राचीन है। वैदिक साहित्य के पर्यवेक्षण से यह ज्ञात होता है कि स्तोत्र साहित्य की परम्परा का प्रारम्भ वेदों से ही हुआ है।वैदिक साहित्य में अनेक ऐसे मन्त्र है जिनमें मानव आत्मा का ईश्वर के साथ बालक अथवा प्रेमिका जैसा सम्बन्ध स्थापित किया गया है।

सूक्तों में प्रायः गीतात्मक विषुद्धता पूर्णतः निखरी नहीं है फिर भी सूक्तों विकास ने एक अभिजात परम्परा का रुप ले लिया है। काल परिवर्तन के साथ–साथ वैदिककालीन देवताओं के स्थान पर अनेक नवीन देवताओं को मान्यता मिलने लगी। उन नये देवताओ में अग्नि इन्द्र वायु सोम अश्विनीकुमार उषस् आदि वैदिक देवों के अतिरिक्त त्रिमूर्ति कल्पना संसार में रुढ हो गयी। वेदों में प्राप्त इन्द्रादि देवताओं के स्तुतिपरक मन्त्रा को स्तोत्र साहित्य का प्रेरणा स्तोत्र माना जाता है। ब्राहम्ण संस्कृति के स्तोत्रों की आराध्य शक्तियाँ वैदिक देव शास्त्र से उदभावित होकर पुराणकालीन देव शक्तियों से विकासोन्मुख हुई सी प्रतीत होती है। कतिपय स्तोत्र तो पुराणों के ही अंश है–'संस्कृतेभ्य च देवता स्तोत्राणि'।[15]

इसके अतिरिक्त इतिहास पुराणों में भी स्तोत्रों का उन्मेष प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। रामायण में 'आदिव्यहृदय स्तोत्र' मिलता है। जिसे अगस्त्य मुनि ने राम को बताया था। महाभारत में 'विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र' जिसे भीष्म ने युधिष्ठिर को उपदेश दिया था। इस प्रकार वेद इतिहास और पुराणों में स्तोत्र काव्य का रुप दिखायी तो देता है किन्तु इससे पूर्व स्तोत्र काव्य स्वतंत्र रचना के रुप में नहीं देखे गए। अन्वेष्ण करने से यह भी ज्ञात होता है कि रामायण महाभारत व पुराणों में असंख्य स्तोत्र काव्यों का मूल अथवा उपजीव्य कहना उचित होगा।

स्तोत्रों के रुप का प्रादुर्भाव तो निष्चित रुप में प्रथम शताब्दी से ही हो गया था किन्तु स्वतन्त्र स्तोत्र काव्य के दर्शन पंचम शताब्दी में सिद्धसेन दिवाकर की 'कल्याण मन्दिरस्तवः' के रुप में ही होते हैं। इसके बाद वेद में वर्णित उनके देवताओं के विग्रहों को आधार बनाकर अनेक स्तोत्रों की रचना हुई। जिसमें द्विश्लोकी चतुःश्लोकी अष्टक तथा सहस्रकादि पद्यों द्वारा स्तोत्राओं ने स्तुति की।

साहित्य के प्रारम्भ में स्तवन गुणकीर्तन रुप कथन और प्रशंसात्मक वर्णनों की प्रधानता थी। उत्तरकाल में स्तुत्य देवता के विरोधियो कर निन्दा द्वारा भी स्तुति की जाने लगी– 'अन्यनिन्दान्यस्तुतये'।16

स्पष्ट है कि स्तोत्रों की विशेषताओं को वेद से प्रारम्भ कर इतिहास पुराण तथा अनेक लौकिक काव्यों में प्रचुरता के साथ देखा जा सकता है। चाहे गम्भीर रहस्यों का विचार हो या देवताओं के उत्कर्ष का परिचय देना हो अथवा स्तोत्रकार की तन्मयता और सहज पद्धति का प्रकाशन हो। वैदिक मंत्रदृष्टाओं से लेकर संस्कृत के उदभट कवियों ने इष्ट विषयक स्तुतियों की रचना में अपनी मेधा के सरस व प्रांजल स्वरुप का बहुत विस्तार के साथ परिचय दिया है। महाकवि कालिदास के अनुसार 'स्तोत्र कस्य न तुष्टये' अर्थात् विश्व में ऐसा कोई प्राणी नहीं है जो स्तुति से प्रसन्न न हो जाता हो।राजनीति ग्रन्थों में कहा गया है कि 'साम' या स्तुति के द्वारा राक्षस आदि भयंकर सत्व भी वशीभूत हो जाते है इसीलिए दण्ड भेद दान आदि नीतियों में 'साम' या स्तुति–प्रशंसा को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार भगवान की असीमित महिमा शक्ति और त्रिभुवन मोहक सौन्दर्य का काव्यमय वर्णन पढकर एवं सुनकर प्रत्येक सहृदय गद गद हो उठता है। अलंकारों में गूथे जाने योग्य शब्द रत्न स्वतः ही उनकी भाषा विस्तार परिधि में सिमटते चले आते हैं। यह भाव प्रवण स्तोत्र काव्य भक्तों के हृदयों को अलौकिक आन्नद प्रदान कराता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. ऋग्वेद 1,28,8
2. अमरकोष काण्ड 1 श्लोक 11
3. वही काण्ड 2 श्लोक14
4. विष्णुसहस्रनाम श्लोक 8
5. ऋग्वेद 1/1
6. षट्पदी श्लोक 1
7. श्रीभगवती स्तोत्र श्लोक 4
8. श्री भगवच्छरण स्तोत्र श्लोक 2
9. श्री विश्वनाथाष्टकम श्लोक 5
10. आन्नद लहरी श्लोक 3
11. चर्पटपंजरिका स्तोत्र श्लोक1
12. श्रीमद्भागवत महापुराण स्कन्ध 1 अध्याय 9 श्लोक 2
13. श्रीरामरक्षास्तोत्रम् श्लोक 12
14. श्रीमृत्युंजयस्तोत्रम् श्लोक 1
15. डा0 सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी पृष्ठ 43
16. हिन्दी साहित्य कोष भाग 1 पृष्ठ 945